

ब्रूयात् (hier und da fälschlich ब्रुयात्, ब्रूयुम्; ब्रूहि (unter den Indeclinabilien *gaṇa* चादि zu P. 4, 4, 57), ब्रूवीहि (MBh. 3, 10657. 12470. 13570. 4, 321. Mārk. P. 101, 2), ब्रूतात् (P. 7, 1, 35, Sch.), ब्रूवीतु, ब्रूत, ब्रुवतु; ब्रुवम् (ved. und Mārk. P. 74, 26, 33), ब्रुवम्, ब्रुवतीत् (ब्रुवत् MBh. 7, 9283 fehlerhaft für ब्रुवतीत्, wie die ed. Bomb. hat), ब्रुवीत् (HARIV. 8214. 8921), ब्रुवताम्, ब्रुवन् (ब्रुवन् MAITRUP. 2, 3 wohl fehlerhaft), ब्रूवत् ved., ब्रुवाथ (AV. 7, 56, 7); partic. ब्रूवन्, ब्रूवन् (RV. 9, 39, 1); med. ब्रूते, ब्रुवे, ब्रुवीमहि, ब्रूमे (Bhāg. P. 7, 13, 22), ब्रुवते; ब्रुवीत; ब्रूष, ब्रुवधम् (MBh. 3, 2729, v. l.); ब्रूत; partic. ब्रुवाण. Von allgemeinen Formen nur die 2te pl. prec. ब्रूयास्त zu belegen N. 17, 35 (MBh. ed. Calc. 3, 2729 statt dessen ब्रूयास्तत्, die ed. Bomb. aber ब्रूयास्त mit Erwähnung der Variante ब्रुवधम्). 1) *sagen, aussprechen, berichten; nennen; a) act.*: इन्द्राय नूनमर्चतोक्त्यानि च ब्रूवीतान् RV. 1, 84, 5. इन्द्र ब्रूवीमि ते वचः 19. नर्मस्ते ब्रुवाम् 2, 28, 8. सखे वि शिन्तेत्यब्रूवीत् 4, 35, 3. 5, 63, 1. ब्रूवाणि ते गिरः 6, 16, 16. मधु ब्रुवतः 8, 48, 1. VS. 4, 28, 8, 43. इदं प्रणीतु यदहं ब्रूवीमि AV. 13, 2, 44. तं ह्यपि वरुण ब्रूवीषि पुनर्मधेधव्यानि भूति 5, 11, 7. 19, 12. ऋतु नो ब्रूत यतमो ऽतिरिक्तः 8, 9, 17. 10, 9, 9, 4, 14. प्र नो वोचस्तमिह ब्रूवः 7, 2, 1. अग्निं ब्रूमे वनस्पतीन् *die Rede richten an* 11, 6, 1. figg. CAT. Br. 3, 8, 4. 4, 1, 5, 10. 5, 1, 2, 18. तदग्नयेतवै ब्रूयात् *er heiße das Ross herbeiführen* 2, 1, 4, 16. 3, 4, 16. उष्णीषमुपकल्पयितवै ब्रूयात् 4, 5, 2, 2. 3. प्राञ्चं कर्तव्यं ब्रूयात् 12, 4, 4, 6. Kāty. Cr. 3, 6, 16. 22, 8, 19. — इति ब्रुवन् M. 2, 216. 3, 222. fig. 5, 41. ब्रूकीति ब्राह्मणं पृच्छेत् 8, 88. Jāṇ. 2, 185. Hip. 1, 25. MBh. 2, 1414. 3, 12467. 5, 7058. 7159. fig. R. 1, 2, 19. ब्रूत किं कर्वाणि 14, 27. 53, 14. Vid. 176. 286. Hit. I, 39. 17, 17. Vet. in LA. 8, 3. Daṣak. in BENF. Chr. 183, 11. 187, 2. 16. मृषा M. 8, 89. 263. अन्यथा 90. पुनर्ब्रूवीत् *antwortete* N. 3, 10. अथ क्रतुं प्रजापतिमब्रूवन् *sprachen zu* MAITRUP. 2, 3. PRAÇNOP. 6, 1. M. 1, 60. 2, 73. 123. 129. fig. 3, 252. MATSOP. 47. Hip. 1, 21. MBh. 1, 4762. 2, 506. 3, 2097. 5, 7098. HARIV. 8214. R. 1, 9, 25. 13, 49. 6, 1, 37. RAGH. 1, 86. MEGH. 99. Mārk. P. 74, 26. 33. स्वयं चैव ब्रूवीषि मे Bhāg. 10, 13. नापृष्टः कस्यचिद्ब्रूयात् Spr. 1539. BHATT. 6, 49. इदं वचनमब्रूवन् *sprachen diese Rede* M. 1, 1. MBh. 3, 2738. 5, 7136. R. 1, 1, 8. सत्यं ब्रूयात्प्रियं ब्रूयात् M. 4, 138. 8, 74. 76. 78. 88. MBh. 3, 2896. R. 1, 7, 12. उपनिषदं भो ब्रूहि *theile mit* KENOP. 32. MBh. 1, 96. 3, 2965. R. 1, 39, 10. न च द्विजातयो ब्रूयुर्नात्रा पृष्टा क्विर्गुणान् M. 3, 236. वरं ब्रूहि Vet. in LA. 33, 18. दश स्थानानि दण्डस्य मनुः स्वायेभ्यो ऽब्रूवीत् *nennen, angeben* M. 8, 124. श्रुतं देशं च ज्ञातिं च कर्म शारीरमेव च । वितथेन ब्रुवन् *falsch angeben* 273. यः प्रश्नं वितथं ब्रूयात् *falsch —, unwahr beantworten* 94. mit dopp. acc.: माणवकं धर्मं ब्रूते P. 1, 4, 51. Sch. Vop. 5, 6. तम् — वचनमब्रूवीत् MATSOP. 5. Sāy. 4, 4. Hip. 2, 23. 3, 4. 16. MBh. 1, 3958. 3, 1723. 2011. 2721. 5, 5966. 7, 9283. R. 1, 1, 36. 14. 27. 38. 17. 34, 9. KATHAS. 4, 50. Vid. 160. BHATT. 6, 108. mit dem acc. der Sache und gen., dat. oder loc. der Person: तेषां वेदविदे ब्रूयुस्त्रयो ऽप्येनस्सु निष्कृतिम् M. 11, 85. तस्य ब्रूयात्सदा प्रियम् Spr. 2428. रम्या काचित्कथा ब्रूहि — मम KATHAS. 1, 23. सत्यं ब्रूवीमि ते MBh. 3, 2722. 2895. 10657. BHATT. 6, 102. तान्ब्रूवीमि ते *die nenne ich dir* Bhāg. 1, 7. Sāy. 2, 21. तस्मै नाकुशलं ब्रूयात् M. 11, 35. तस्मै मां (विद्यां) ब्रूहि *mittheilen* M. 2, 115. R. 3, 74, 27. Vid. 130. न चाप्रियं प्राणिषु यो ब्रूवीति Spr. 2790. — तान्कव्यकव्ययोर्विप्राननर्हान्मनुर्ब्रूवोत् *diese hat er für unwürdig erklärt* M. 3, 150. 4, 103. 5, 131. 6, 54. 8, 168. 242. 292. 339.

9, 182. 10, 63. काणां वाप्यथ वा खञ्जमन्यं वापि तथाविधम् । तथ्येनापि ब्रुवन् 8, 274. यत् — मां ब्रुवति जगद्गुरुम् Bhāg. P. 2, 3, 12. *von Etwas oder von Jmd (acc.) sagen, aussagen*: ममायमिति यो ब्रूयान्निधिं सत्येन M. 8. 35. अकन्येति तु यः कन्यां ब्रूयात् 225. 10, 73. Spr. 3933. statt des blossen acc. der acc. mit अधिकृत्य oder प्रति: शकुन्तलामधिकृत्य ब्रूवामि *ich spreche von Çak. Çāk. 23. 5. इतीव रामो बहुसंगतं वचः — सरितं प्रति ब्रुवन् R. 2, 93, 19 (104, 20 GORR.). sagen so v. a. vorhersagen, verkünden*: तदपि सर्वमस्यानां वृद्धिं ब्रूयाद्विचक्षणः VARH. BRH. S. 22. 5. — b) med.: स्वयमेव ब्रूष यते भविष्यति स एतं माहेन्द्रं प्रकम्ब्रूत AIT. Br. 3, 21. नादृष्टे दृष्टो ब्रूवीत Gobh. 3, 5, 16. Āçv. GRHJ. 2, 4, 12. ब्रूषे v. l. für ब्रूवीषि Çāk. 101, 6. ब्रूते Hit. 17, 18. एवं ब्रुवाणान् MBh. 3, 2737. 5, 7098. R. 1, 28, 12. 32, 9. Bhāg. P. 8, 12, 17. BHATT. 3, 32. नैवाहं ब्रुवे मिथ्या 6, 101. एवं ब्रुवाणास्तदाकम् MBh. 3, 2919. अग्यापि ब्रूमे प्रश्नांस्तव *beantworten* Bhāg. P. 7, 13, 22. mit dopp. acc.: रामं यथास्थितं सर्वं धाता ब्रूते स्म विद्वलः *erzählte* BHATT. 6, 8. — तामिन्द्रवज्रां ब्रुवते कवीन्द्र! *nennen* ÇAUR. 21. 17 (BR.). अकृत्को कृत्को ब्रूते *erklären für* Jāṇ. 2, 241. ब्रूते ऽन्यस्यातो ऽप्यार्यो गुणान्दण्डास्तु दुर्जनः *redet von* Spr. 2001. प्राणानां वत किं ब्रुवे कठिनताम् 1894. SOM. NALA 139. — 2) *sich nennen, genannt werden. heissen; a) med.*: अथं चिह्नं उत ब्रुवे *und so heisst es auch von euch, und so nennt man euch wirklich* RV. 8, 72, 9. 3, 34, 7. प्रयुञ्जती दिव ऐति ब्रुवाणा मही माता 5, 47, 1. उत घा नेमो अस्तुतुः पुमं इति ब्रुवे पणिः 61, 8. ज्ञं च मित्रो यतति ब्रुवाणाः 7, 36, 2. 3, 39, 1. (इन्द्र!) तन्यति ब्रुवाणाः *etwa sich ansagend, sich zu erkennen gebend* 6, 38, 2. स इन्द्रो ब्राह्मणो ब्रूवाणं *erklärt sich auswendig für* TBr. 1, 1, 2, 5. CAT. Br. 2, 1, 2, 14. 3, 3. 4, 19. 1, 6, 1, 8. पौराणवो ब्रुवाणा ऽहं बल्लवो नाम MBh. 4, 28. 560. ब्रह्म-ब्रुवाणा *sich für einen Brahmanen auswendig* 5, 2427. गौतमब्रुवाणा. गौतमो वा ब्रुवाणाः Ind. St. 1, 38. ब्रूते कथा स्वयमेव *erzählt sich selbst* P. 3, 1, 89. Vārtt., Sch. Vop. 24, 12. Vielleicht *sich sagen lassen, fragen nach* (wie εἰρημαί): ज्ञामि ब्रूवतं श्रुयुधम् RV. 8, 6, 3. ज्ञामि ब्रुवाणं श्रुयुधानि वेति 10, 8, 7. — b) act.: ब्रुवन्ब्रुवन्ब्रुवातीयः *sich auswendig für* MBh. 4, 538. — Vgl. ब्रुव.

— अचक्रा med. herbeirufen PAṢKAV. Br. 13, 6, 9.

— अति *schmähen*: यशस्विनस्तीदृषाविषान्मकार्थानतिब्रुवन् अभिब्रुवन् ed. Bomb.) मूढ न लज्जते कथम् MBh. 3, 15640.

— अधि *segnen, trösten* (dat.), *Muth einsprechen; fürsprechen für*: कस्तोकाय क शोपोत राये ऽधि ब्रुवन्ब्रूहि को जनोय RV. 1, 84, 17. 33, 11. मूढां च नो अधिं च ब्रूहि 114. 10. 6, 73, 12. 10, 13, 5. 63, 1. तस्मै सोमो अधिं ब्रुवत् 173, 3. AV. 8, 2, 8. अधिं नो ब्रूतं पतनामूपा 4, 28, 7. 8, 2. 27, 1. VS. 13, 1. 17, 52. यद्वाक्ष्णशात्राक्ष्णश्च प्रश्नमेयातां ब्राह्मणायधिब्रूयात् TS. 2, 3, 11, 9.

— अनु 1) *hersagen, recitieren*: पामिः TBr. 1, 4, 6, 6. TS. 6, 1, 4, 1. यो जुष्टं देवेभ्यो ऽनुब्रुवत् CAT. Br. 1, 3, 4, 18. 11, 2, 6, 3. सामिधेनीः AIT. Br. 1, 1. CAT. Br. 1, 3, 5, 10. ÇĀURH. Cr. 5, 2, 3. Āçv. Cr. 2, 17. आशिषो ऽनुब्रुवाणम् MBh. 1, 176. एतान्कृत्वा कीदृशं तत्तुल्यं स्याद्विन्देधास्तदनुब्रूहि *sage, sprich* 5, 791. ऋते वामोदशं वाक्यं कः समर्थो ह्यनुब्रुवन् HARIV. 13494. Jmd Etwas vorsagen, lehren, mittheilen CAT. Br. 11, 3, 4, 12. Pār. GRHJ. 2, 3. MAITRUP. 4, 5. द्विजातये । इमां कथामनुब्रूयात् KĪRMA-P. in Vorz. d. Oxf. H. 7, 6, 2 v. u. यो वेदमनुब्रूते (शिष्येभ्यः) ÇĀURH. Cr. 15, 16, 6. GRHJ. 2. 3. — 2) *das Wort* (einladend, ehrerbietig) *richten an* (dat.). Jmd (dat.)